

महामना दर्शन एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

डॉ. सुमन जैन
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी
महिला महाविद्यालय,
का.हि.वि.वि.

tarushikha.9@gmail.com

जो स्थान नदियों में गंगा का है, पर्वतों में हिमालय का है, वृक्षों में कल्पवृक्ष का है, मंत्रों में ओम् का है, रचनाकारों में व्यास का है, महात्माओं में मो०क० गाँधी का है, वही स्थान मनीषियों में महामना पं० मदन मोहन मालवीय का है, जो राष्ट्रीय जागरण तथा राष्ट्र निर्माण के आधुनिक कालखण्ड के लगभग ६० वर्षों जीवित इतिहास है। उन्होंने राजनीति शिक्षा, एवं संस्कृतिक जगत् में युगपरिवर्तन के साथ युग प्रवर्तन का काम किया, जिससे आज हम युग का नया इतिहास रचने को प्रेरित है। महामना मालवीय जी का जन्म पौष कृष्ण अष्टमी बुधवार विक्रमी संवत् १९१८, २५ दिसम्बर १८६१ को प्रयाग के एक सुशिक्षित मध्यवर्गीय, तदनुसार सनातनी परिवार में हुआ था। आपके पिता पण्डित ब्रजनाथ जी, संस्कृत और हिन्दी के विख्यात विद्वान गीता, भागवत, महाभारत और रामायण की व्याख्या करने में वे निपुण थे। अतः मालवीय जी को संस्कृत हिन्दी का ज्ञान पिता से धरोहर के रूप में प्राप्त हुआ। माता मूनादेवी जी सरलता वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थी। दीन दुखियों के प्रति उनकी सदाशयता अनुपम थी।

पाँच वर्ष की उम्र में बालक मदन मोहन ने अपनी बुनियादी शिक्षा प्रारम्भ की। उनका नाम स्थानीय 'धर्मज्ञानोपदेश पाठशाला' में लिखा गया। यह पाठशाला मूल्य और नैतिकता के प्रति समर्पित है। वहाँ विद्यार्थियों को नित्य ही मनुस्मृति, गीता एवं नीति के श्लोक कंठस्थ कराये जाते थे। महामना ने श्लोक नीति पाठ को अपना मूल धन माना। उन्होंने लिखा है "मुझे कुछ श्लोक और स्तोत्र पिता जी ने याद करा दिये थे और कुछ गुरुदेव जी की पाठशाला में याद हो गये। आज तक हमारी मूलधन पूँजी वही है।"

पाठशाला के प्रधानाचार्य पं. देवकीनन्दन जी एक बार सन् १८६९ माघ मेले के अवसर पर मदन मोहन को तीर्थयात्रियों के बीच ले गये और उनको कुछ बोलने का आदेश दिया। मदन मोहन ने पूरी तन्मयता के साथ घण्टा भर संस्कृत श्लोकों का पाठ किया और उसका सार बताया। महामना का यह प्रथम सार्वजनिक वक्तव्य था, जिसकी प्रशंसा चारों ओर हुई।

बालक मालवीयजी को ७ वर्ष की अवस्था में अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा के लिए उन्हें स्थानीय जिला हाईस्कूल में भेजा गया। यहाँ चौथी कक्षा में आपकी भर्ती हुई। जिला स्कूल की फीस तो नाम मात्र की थी, परन्तु उसे भी भरने के लिए घर के बजट से कटौती करनी पड़ती थी। एक बार तो पैसे के अभाव में पुत्र शिक्षा से वंचित न जाये इसलिए माता मूनादेवी ने अपने कंगन गिरवी रखे। इस घटना का मालवीयजी पर गहरा प्रभाव पड़ा। महामना गरीब विद्यार्थियों की बहुत मदद करते थे। इसका कारण बताते हुए कहते थे।

"मैं गरीब माता-पिता का पुत्र हूँ, इससे गरीब विद्यार्थियों के कष्ट को समझता हूँ। जिनके माता-पिता की मासिक आय तीन-चार रुपये भी न हो, विश्वविद्यालय की लम्बी फीस न दे सकने के कारण विद्या से वे वंचित हो जायें, यह बात मुझे बड़ी पीड़ा पहुँचाती है।"

बालक मालवीय के घर में अध्ययन हेतु स्थान की कमी होने पर बस्ता और लालटेन लेकर घर से कुछ दूर सोहनलाल जी की बगिया में चले जाते थे । अध्ययन के बाद मालवीयजी कभी-कभी वहीं सो जाते और सुबह घर आते थे ।

८ वर्ष की अवस्था में आपका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ । पिता ने गायत्री मंत्र की दीक्षा दी । धार्मिक भावों की ओर मालवीय जी का झुकाव बचपन से ही था । स्कूल जाने से पहले रोज हनुमान जी का दर्शन करने जाते और यह श्लोक नियम से पढ़ते-

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥

बालक मालवीय बचपन से ही आचार विचार, रहन-सहन एवं खान-पान में काफी संयमी रहे । युवा काल से ही आपने ने एक विशेष वेशभूषा अपनायी । वह आजीवन बनी रही । महामना ने जीवन में कभी कोई नशा नहीं किया, चाय तक कभी नहीं ली । १९१३ में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा था-

“मनुष्य को परमात्मा ने सबसे बड़ी वस्तु बुद्धि दी है । जो वस्तु बुद्धि को मैला करती है या सुमति हर लेती है, उसको मादक, अर्थात् नशीली वस्तु कहते हैं । मनुष्य के लिये उचित है कि किसी प्रकार का नशीला पदार्थ कभी ग्रहण न करे ।

सन् १८७९ में प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर मालवीय जी ने उच्च शिक्षा के लिए स्थानीय म्योर सेन्ट्रल कालेज, इलाहाबाद में प्रवेश लिया । यहां इन्टरमीडिएट, बीए. उत्तीर्ण कर १८९१ में एल.एल.बी. में प्रवेश लिया । फ्रेन्ड्स डिबेटिंग सोसायटी में आपने पहला भाषण अंग्रेजी में दिया । प्रिंसिपल ने आपके भाषण से प्रभावित होकर फीस माफ की और मासिक वजीफा भी देना आरम्भ कर दिया । कालेज में शिक्षा लेते समय मालवीय जी छुट्टियों में संस्कृत पढ़ने अपने चाचा पण्डित गदाधर जी के पास मिरजापुर चले जाते थे ।

महामना जी की स्मरण शक्ति बचपन से ही अत्यन्त प्रबल थी, जो जीवन भर रही । तीव्र मेधा और अनुपम धारणा शक्ति के कारण ही आप देश के महानतम वक्ता कहलाए । डॉ. राधाकृष्णन् ने मालवीय जी के लिए कहा- “He was the greatest orator in both hindi and English.”

सन् १९१९ में रोलेट एक्ट के खिलाफ शिमला कौन्सिल में मालवीय जी ने तीन दिन तक भाषण दिया था । जनरल डायर के लोमहर्षक अत्याचारों पर आप का भाषण इतना मार्मिक था कि भाषण के बीच में सरकारी सदस्य भी रो पड़े थे । दर्शक दीर्घा में बैठे विदेशी पत्रकारों ने रिपोर्टिंग की थी-

“एक व्यक्ति जो न तो अंग्रेज है और न जिसकी भाषा अंग्रेजी है । वह बिना किसी तैयारी के और अपनी बात को बिना दुहराये, इतनी गहराई और विस्तार के साथ अंग्रेजी में लगातार इतना लम्बा भाषण दे सकता है । आश्चर्य है इसकी समृति मेधा पर ।”

महामना की अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं पर गहरी पकड़ थी । आप इन दोनों भाषाओं में धाराप्रवाह बोलते थे । यह असाधारण क्षमता आपको युवाकला में ही प्राप्त हो चुकी थी । महामना के भाषण से प्रभावित होकर ही विद्वान पण्डित नन्दराम जी ने अपनी कन्या कुन्दन देवी जी का विवाह आपके साथ कर दिया ।

मालवीय जी की अपने माता-पिता एवं गुरु के प्रति असीम भक्ति थी। काशी हिन्दू विश्वविधालय स्थित मालवीय भवन के अपने शयन कक्ष में आमने-सामने अपने माता-पिता, गुरु पं. ब्रजनाथ जी व्यास और गुरु पं. आदित्य राम भट्टाचार्य के चित्र निश्चित स्थान पर लगा रखे थे। वे कहते थे- “हमारे माता-पिता बड़े धर्मात्मा पवित्र और निस्वार्थ ब्राह्मण थे, उन्हीं के प्रसाद से मैं इतना काम कर सका हूँ।”

स्नातक होने के बाद मालवीय जी अपना पूरा समय धर्म प्रचार और देश-सेवा में लगा देना चाहते थे, लेकिन परिवार की आर्थिक स्थिति उसके अनुकूल नहीं थी। जिस गर्वमेन्ट हाईस्कूल से मालवीय जी ने शिक्षा ग्रहण की थी, उन्हीं दिनों अध्यापक की जगह खाली हुई। पहले तो उन्होंने नौकरी के लिए मना कर दिया, परन्तु माता की डबडबाई दृष्टि देखी तो मना न कर सके। महामना ने कहा- “आज तक माँ की वह डबडबाई आँखें मेरे हृदय में धँसी हुई हैं, मैंने कहा माँ मुझसे कुछ मत कहो। मैं नौकरी कर लूँगा।”

जुलाई १८८५ में महामना ने जिला हाईस्कूल में अंग्रेजी अध्यापक का दायित्व स्वीकार कर लिया। उन्हें ५० रुपये माहवार मिलते थे। उन्होंने लिखा है “मैं ग्रन्थों से नये-नये ज्ञान का अर्जन करता और उन्हें अपने छात्रों में बाँट देता था। बड़ा सुखद था हमारी अध्यापकीय जीवन।”

दिसम्बर १८८६ में कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के द्वितीय अधिवेशन में देश की राजनीति में मालवीय जी की माँग और सक्रियता काफी बढ़ गई। अध्यापन के बाद मालवीय जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखा। कालाकांकर से निकलने वाले हिन्दी दैनिक ‘हिन्दोस्थान’ पत्रिका के आप प्रथम सम्पादक रहे। यह पत्र पहले अंग्रेजी में सन् १८८३ से इंग्लैण्ड से निकलना शुरू हुआ था। सन् १८८६ से इसका साप्ताहिक हिन्दी संस्करण भारत से निकला। आपके प्रयत्न से ‘हिन्दुस्तान’ चमक उठा, प्रतियों की संख्या बढ़ गयी। हिन्दुस्तान के बाद आप ‘इण्डियन ओपिनियन’ के सह सम्पादक रहे। ‘अभ्युदय’ और ‘लीडर’ के आरम्भिक सम्पादक भी मालवीय जी रहे। ‘अभ्युदय’ १९१५ से दैनिक बना और १९४८ तक निकलता रहा। सन् १९१९ में इसकी ११ हजार प्रतियाँ निकलती थीं। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, सदानन्द जोशी, कृष्णाकान्त मालवीय, गणेश शंकर विद्यार्थी, वेंकटेश नारायण तिवारी, और पंडित पद्मकान्त मालवीय इसके अन्य सम्पादकों में रहे। ‘लीडर’ की सम्पादकीय टीम में नागेन्द्रनाथ गुप्त, सी.वाई.चिन्तामणि आदि थे। सन् १९२७ में इसकी ३० हजार प्रतियाँ निकलती थीं। मर्यादा, हिन्दुस्तान टाइम्स, सनातनधर्म, जैसी अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन करते हुए आपने सम्पादन कला, को समृद्ध किया। पत्रकारिता आपके लिए एक मिशन थी।

महामना ने एक वर्ष तक जिला कचहरी में प्रैक्टिस करने के बाद १८९२ में हाईकोर्ट इलाहाबाद से वकालत आरम्भ की। आप एक कुशल वकील के रूप में विख्यात हुए। यदि आप एकनिष्ठ होकर इस पेशे में लगे रहते तो देश के सर्वाधिक वैभवशाली विधिवेत्ताओं में आपकी गिनती होती। किन्तु आपने अपना जीवन राष्ट्र के नाम समर्पित कर दिया। ४ फरवरी १९२२ के चौरा-चौरी काण्ड के अभियुक्तों के पक्ष में जिरह कर आप ने १५६ लोगों को फाँसी के फंदे से बचाया।

महामना की वकालत की कुछ खास विशेषताएँ थीं। गरीबों के केस या सार्वजनिक हित के मामलों में फीस न लेना। ऐसा केस हाथ में न लेना, जिसमें झूठ बोलना पड़े। हमेशा सफेद गाउन धारण करना। विधिवेत्ता सर तेजबहादुर सप्रू के अनुसार-

“वकालत में मालवीय जी तीव्र मेधा वाले वकील के रूप में प्रसिद्ध थे।”

सन् १९०१ से १९१६ तक आप म्युनिसिपैलिटी के क्रमशः सदस्य, उपाध्यक्ष, अध्यक्ष पद पर सक्रिय रहे ।

महामना मालवीय स्वदेशी आन्दोलन के अग्रणी नेताओं में थे । आपने जीवन में कभी विदेशी वस्त्र धारण नहीं किया । उन दिनों मालवीय जी की एक सार्वजनिक अपील हुआ करती थी-

“वस्त्रहि के कारण बढ़ौ इहाँ विदेशी राज ।
तजे विदेशी वस्त्र को जो तुम चहो स्वराज ॥”

सन् १९०६ में प्रयाग संगम पर आयोजित सनातनधर्म महासभा सम्मेलन में महामना ने प्रत्येक स्त्री पुरुष से देश की स्वतंत्रता और समृद्धि के लिए अपने हाथ से बने खदर के वस्त्र पहनने की अपील की । सन् १९३२ में मालवीय जी ने ‘अखिल भारतीय स्वदेशी संघ’ काशी की स्थापना कर आन्दोलन को और तेज किया । स्वदेशी महामना के लिए कोई नारा नहीं, बल्कि देश के सर्वतोमुखी विकास का एक स्वप्न था ।

१४ वर्ष अवस्था में भारतेन्दु मण्डली के एक सशक्त कवि के रूप में प्रतिष्ठित मालवीय जी ने हिन्दी भाषा लिपि के संरक्षण और संवर्धन हेतु सन् १८४८ में ‘हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि सभा’ गठित की । यही आगे चलकर सन् १८९३ में ‘काशी नागरी प्रचारिणी सभा’ का अधिष्ठान बनी ।

महामना ने सन् १९०० में देश की सेवा प्रतियोगिता परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम से परीक्षाएँ ली जाने की मांग सरकार से की, जो स्वीकृत हुई । विविध साहित्य सम्मेलनों के आप अध्यक्ष, सभापति रहे ।

कांग्रेस को बनाने बढ़ाने वालों में महामना का नाम विशेष आदर से लिया जाता है । कांग्रेस से उनका सम्बन्ध जीवन भर रहा । डॉ. पट्टाभिसीतारमैया के अनुसार- “सन् १९३२-३३ के संकट काल में मालवीय जी अपने आत्मबल और अपूर्व शक्ति द्वारा कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित अनुप्राणित करते रहे ।”

असहयोग आन्दोलन की विफलता के बाद १९२१ में गाँधी जी ने दिल्ली में मौलाना मुहम्मद अली के घर पर २१ दिन का उपवास किया । उस समय मालवीय जी ने गाँधी जी को एक सप्ताह तक भागवत कथा सुनाई थी । पूरा देश इस समाचार से चकित था ।

२९ अगस्त १९३१ को द्वितीय गोल मेज सम्मेलन में भाग लेने हेतु आपने गाँधी जी और सरोजनी नायडू के साथ लंदन प्रस्थान किया । भारत के राजनैतिक और संवैधानिक मामलों पर वार्ता के लिए आहूत इस ऐतिहासिक बैठक में कोई ठोस नतीजे नहीं निकल सके । महामना ने संतप्त हृदय से कहा- “हम भारतीय जनता की दयनीय दशा से तब तक नहीं उबर सकते, जब तक हमारे हाथ में प्रबन्धन अधिकार न हो ।”

महामना ने जीवन भर हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रयास किये । सन् १९३५-३६ जिस समय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में मात्र ७-८ मुस्लिम विद्यार्थी थे मुस्लिम त्यौहारों पर अवकाश की घोषणा महामना ने की वे सभी धर्मों का आदर करते थे । सितम्बर १९२२ में मुल्तान में भयंकर दंगा हुआ, तब हृदयविदारक दृश्य देखकर मालवीय जी फूट-फूट कर रो पड़े, उन्होंने कहा-

“सब अत्याचारी धर्महीन और नास्तिक है ।”

सरकारी संरक्षण में ईसाई मिशनरियों द्वारा किये जा रहे धर्म परिवर्तन और हिन्दू धर्म संस्कृति के उपहास से उनका मन विचलित था । इसलिए उन्होंने सांस्कृतिक नव जागरण का कार्य किया । ‘मध्य हिन्दू समाज’, ‘भारत धर्म महामण्डल’, ‘निगमागम-मण्डली’, ‘सनातनधर्म महासभा’, ‘हिन्दू महासभा’ जैसे महत्वपूर्ण संगठन बनाये ।

समाज के हाशिये पर उपेक्षित अन्त्यज वर्ग को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए मालवीय जी ने १९२१ में अन्त्यजोद्धार सभा का गठन कर मंत्र दीक्षा का अभि नवप्रयोग किया । २५ दिसम्बर १९३२ को बंबई में आपने अन्त्यजोद्धार सभा की अध्यक्षता की लोक शिक्षण के लिए ग्राम सभा, संस्कार शिक्षण के लिए शुभ कथा, अशिक्षा निवारण के लिए पाठशाला, शक्ति संवर्धन के लिए व्यायामशाला और स्वास्थ्यप्रद दुग्ध के लिए गोशाला को प्रश्रय दिया उनका दिशा दर्शन सूत्र है-

“ग्रामे ग्रामे सभा कार्या, गेहे गेहे शुभो कथा ।
पाठशाला, मल्लशाला, गवां सदन मेव च ॥”

अछूतों ने उन्हें चन्दन लगाया और माला पहनाई । उक्त सभा में अस्पृश्यता निवारण में कई प्रस्ताव पास किये गये ।

महामना का गोरक्षा आन्दोलन धार्मिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य तीनों कारणों से प्रेरित था । विद्यार्थियों के लिए आपका संदेश था-

“दूध पियो कसरत करो, नित्य जपो हरिनाम ।
मन लगाय विद्या पढ़ो, पूरेगे सब काम ॥”

स्त्री शक्ति और सुरक्षा को लेकर उनके विचार सर्वदा प्रासंगिक रहेगे उनका कहना था- “मैं चाहता हूँ हमारे देश की सभी स्त्रियां अंग्रेज महिलाओं की भाँति पिस्तौल और बन्दूक रखें और चलाना भी सीखें, ताकि उसे किसी भी आक्रमण के समय अपने सतीत्व की रक्षा कर सके ।” महामना जी स्त्री शिक्षा को पुरुष शिक्षा से भी ज्यादा महत्वपूर्ण मानते थे । इसके लिए उन्होंने प्रयाग में गौरी पाठशाला और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में महिला महाविद्यालय की स्थापना की ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय महामना की अनुपम एवं महान कृति है । इसकी स्थापना का संकल्प १८८४ में ही ले लिया था । ४ फरवरी १९१६ को तत्कालीन वायसराम लार्ड हेर्डिग्स ने इसका शिलान्यास किया । १ अप्रैल १९१६ से बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी एक्ट काम करने लगा । विद्यार्थियों के लिए महामना का दिया हुआ यह संदेश स्मरणीय है-

“हिन्दू विश्वविद्यालय की यह फैली हुई भूमि, हरी मखमली दूब से भरे सुहावने बड़े-बड़ खेल के मैदान, स्वच्छद उन्मुक्त वायु, माँ पतित पावनी गंगा का पुनीत पावन तट, संसार में कहीं ऐसा दूसरा स्थान तुम्हारे लिये नहीं, यहाँ के पवित्र वातावरण से हृदय को पवित्र बना लो, मन को विमल बना लो, आत्मा को शुद्ध कर लो, संसार में जहाँ कहीं भी जाओगे, मन के अधिकारी होओगे ।” महामना ने एक ऐसे विश्वविद्यालय का स्वप्न साकार किया जहाँ संस्कृत, ज्योतिष, हिन्दू धर्म-दर्शन के अलावा विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहित आधुनिक विषयों का अध्ययन-अध्यापन और शोध किया जा सके । महामना ने १९२९ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भाषण में कहा- “इस

विश्वविद्यालय का आदर्श एक ऐसे शिक्षा केन्द्र के निर्माण से था, जहां भारतवर्ष के प्राचीन गुरुकुल, तक्षशिला तथा नालन्दा के उन विश्वविद्यालयों की उच्चतम प्रणाली का पुनरुत्थान किया जा सके, जिनमें हिन्दू महात्माओं ने दस हजार विद्यार्थियों को एक ही साथ पढ़ाया तथा भोजन दिया था, और जहाँ वर्तमान पश्चिमी विश्वविद्यालयों की श्रेष्ठतम संस्कृति तथा प्रणाली के अनुसरण के साथ-साथ कला, विज्ञान और शिल्पादि कला सम्बन्धी उच्चतम शिक्षा का भी सुन्दर संयोग हो।”

इस प्रकार विश्वविद्यालय के निम्नांकित ध्येयों की रचना हुई-

१. हिन्दू-शास्त्र तथा संस्कृत भाषा के अध्ययन की वृद्धि जिसके द्वारा भारत वर्ष की प्राचीन सभ्यता में जो कुछ भी श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण था, उसकी तथा हिन्दूओं की प्राचीन संस्कृति तथा भावनाओं की रक्षा, और मुख्यतः हिन्दुओं में और सार्वजनिक रूप से सर्वसाधारण में उसका प्रचार हो सकें।

२. कला और विज्ञान की सर्वतोमुखी शिक्षा तथा अन्वेषण की वृद्धि।

३. आवश्यक प्रयोगात्मक ज्ञान के साथ-साथ विज्ञान शिल्पादि कला-कौशल तथा व्यवसाय सम्बन्धी ऐसे ज्ञान की वृद्धि, जिससे देशीय व्यवसाय तथा धन्धों की उन्नति हो।

४. धर्म और नीति को शिक्षा का आवश्यक अंग मानकर युवाओं में नई पीढ़ी का चरित्र निर्माण का विकास करना।”

ऐसे श्रेष्ठ विश्वविद्यालय के लिये उन्होंने काशी को चुना। संयोग से शिक्षा के प्रति समर्पित शिक्षाविद् समाजसेविका डॉ. ऐनी बेसेन्ट से उनकी मुलाकात हुई उनके सहयोग से १९१६ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय सर्वविद्या की स्थली है। यहां प्राच्य विद्या, कला, सामाजिक विज्ञान, संगीत, फाइन आर्ट से लेकर प्रौद्योगिकी और मेडिकल की शिक्षा उपलब्ध है। विश्वविद्यालय में प्रौद्योगिकी, चिकित्सा विज्ञान, कृषि विज्ञान, पर्यावरण एवं संपोष्य विकास नाम से चार संस्थान हैं। परिसर में ही पन्द्रह संकाय, महिला महाविद्यालय व मालवीय शिशुविहार है। डीएवी. पी. जी. कालेज, वसंत कन्या महाविद्यालय (कमच्छा) वसंत कालेज राजघाट व आर्य महिला पीजी कालेज, सेन्ट्रल हिन्दू ब्यासज स्कूल, सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल, रणवीर संस्कृत विद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं।

समय की मांग देखते हुए विश्वविद्यालय में विविध संकायों की स्थापना होती चली जा रही है। कला संकाय पहले सेन्ट्रल हिन्दू कालेज के नाम से जाना जाता था। संस्कृत कालेज अथवा वर्तमान में संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय व शिक्षा संकाय में १९१८ में पढ़ाई प्रारम्भ हुई (बनारस इंजीनियरिंग कालेज (बेंको) की स्थापना १९१९ में हुई थी। १९२३ में कॉलेज ऑफ माइनिंग एवं मेटलर्जी (मिनमेट) व १९३२ में कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी (टेक्नो) की स्थापना हुई। १९६८ में बेंको, मिनमेट व टेक्नों को मिलाकर आईटी बनाया गया और १९७१ से जेईई के माध्यम से बीटेक में प्रवेश लिया जाता है।

लॉ स्कूल की स्थापना १९२१ में व सामाजिक विज्ञान संकाय की स्थापना १९७१ में हुई थी। १९५० में कॉलेज ऑफ म्यूजिक एण्ड फाइन आर्ट्स की स्थापना हुई, जो बाद में मंच कला संकाय और दृश्यकला संकाय के रूप में विभक्त हुआ। १९६० में वाणिज्य संकाय बना तो १९६८ में प्रबंधशास्त्र संकाय की स्थापना हुई। १९१८ में आयुर्वेद का अध्ययन अध्यापन शुरू हुआ।

१९२८ में सर सुन्दर लाल चिकित्सालय की स्थापना हुई, जो पूर्वांचल के साथ आस-पास के प्रदेशों की २० करोड़ जनसंख्या को उच्च चिकित्सा सुविधा मुहैया कराता है। १९६० में आधुनिक चिकित्सा महाविद्यालय बना जो १९७१ में चिकित्सा विज्ञान संस्थान के रूप में उच्चीकृत किया गया। परिसर में अन्तराष्ट्रीय स्तर का संग्रहालय भारत कला भवन है। विश्वविद्यालय में इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का क्षेत्रीय केन्द्र भी है। परिसर में मालवीय भवन, मानव मूल्य अनुशीलन केन्द्र भी स्थित है, जहाँ उच्चस्तरीय मानवीय मूल्यों के पठन-पाठन की कार्यशाला है। योग प्रशिक्षण भी शिक्षकों, विद्यार्थियों का दिया जाता है। परिसर में काशी-विश्वनाथ मंदिर, तरणताल, पेट्रोल पम्प, जिम्नेजियम केन्द्रीय ग्रन्थालय की भी सुविधा उपलब्ध है।

बनारस के अगल-बगल में रोजगार और शिक्षण के अवसर बढ़े इसीलिए मिर्जापुर में राजीवगाँधी दक्षिणी परिसर की भी स्थापना की गई है। विश्वविद्यालय के स्थापना स्थान पर केन्द्र सरकार के अनुदान से ट्रामा सेन्टर का भी निर्माण किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को ११ वीं पंचवर्षीय योजना में ८४५ करोड़ तथा ओबीसी कोटा लागू करने के लिए ५६१ करोड़ रुपये दिये गये। यू जीसी ने बीएचयू को उत्कृष्टता क्षमता वाले विश्वविद्यालय के रूप में सूचीबद्ध किया है। वर्तमान कुलपति प्रो. डी.पी. सिंह के कार्यकाल में शैक्षणिक सुधार के कई कदम उठाये गये हैं। २०१०-११ शैक्षणिक सत्र से विश्वविद्यालय के सभी संकायों में सेमेस्टर व्यवस्था व च्यायस बेस्ट क्रेडिट सिस्टम लागू करने की योजना है। आधारभूत संरचनाओं के सुदृढ़ीकरण, प्रतिभाशाली अध्यापकों को आकर्षित करने, प्रशासनिक सुधार, अनुसंधान प्राथमिकताओं का निर्धारण आदि पर विशेष बल दिया जा रहा है। परिसर में कुल ६५ छात्रावास हैं, जिनमें लगभग १२ हजार विद्यार्थियों के ठहरने की व्यवस्था है। इनमें से २० महिला छात्रावास हैं जिनमें २८०० छात्राओं के रहने की व्यवस्था है। सभी छात्रावासों में मेस के अतिरिक्त इंडोर गेम, इण्टरनेट आदि की व्यवस्था है।

महामना के यश और प्रताप से आज (सन् २०१०) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भारत के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय की दृष्टि से शिखर पर है।

महामना की सेवाएँ अनन्त हैं। ५ जनवरी १९३७ को अपने ७५वें जन्मोत्सव पर आपने कहा था- “देश की दशा बुरी हो गई है, इस दुःख के उमड़ते समुद्र में क्या मुझे मरने का अवकाश है। महामना के लिए कुछ भी असंभव नहीं था। १२ नवम्बर १९४६ को महामना का महाप्रयाण हुआ। महामना ने कहा मुझे राज्य की कामना नहीं, मुझे स्वर्ग की कामना नहीं, मुझे मोक्ष नहीं चाहिए, मेरी एकमात्र कामना बस यही है कि मैं दुःखी प्राणियों के दुःख दूर करूँ, अंधेरी आँखों को रोशनी दूँ, आजीवन इसी संकल्प के साथ देश सेवा के लिए प्रतिपल पूर्णतया समर्पित रहे।